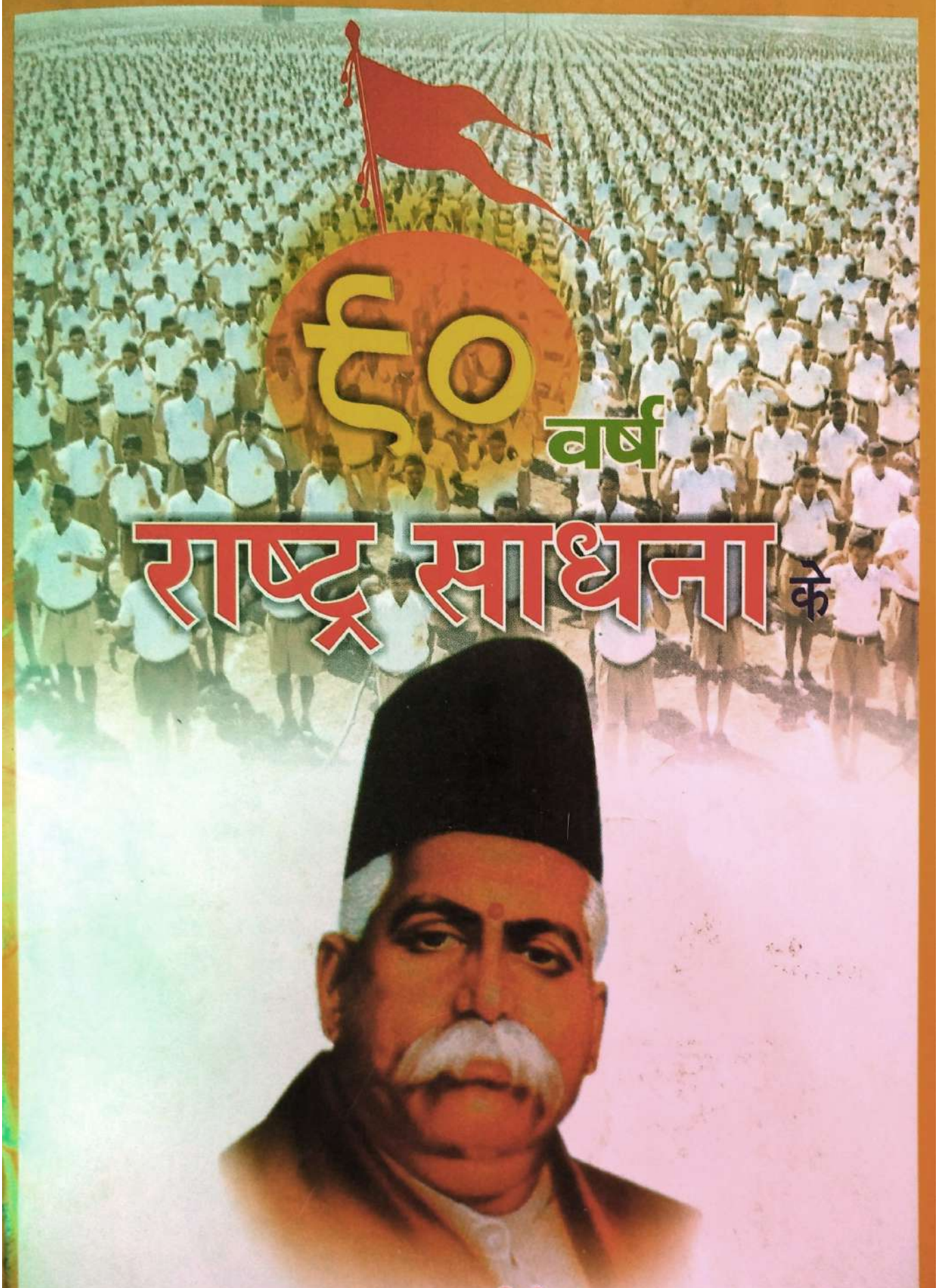

९० वर्ष

राष्ट्र साधना के

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

सम्पर्क विभाग, कानपुर प्रान्त

संघ के नजदीक आइए, देखिये, अनुभव कीजिए, जुड़िए

संगठन का अंकुर व्यक्ति की आकांक्षा से फूटता है। ज्यादातर संगठन किसी एक विषय, किसी एक या परस्पर जुड़े क्षेत्रों में, एक खास 'कल्चर' में काम करते दिखाई देते हैं; लेकिन व्यक्ति या क्षेत्र विशेष की चमक फीकी पड़ते ही ऐसे संगठन भी अस्त होने लगते हैं। ज्यादातर मामलों में यही होता है; लेकिन बतौर संगठन जब राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की यात्रा को देखते हैं तो पाते हैं कि हर पड़ाव, हर संघर्ष के बाद इसकी आभा और निखरती गयी। अन्तर क्या है? अन्तर एक नहीं कई और साफ हैं। यहाँ व्यक्ति नहीं, समाज है। 'कल्चर' नहीं है, संस्कृति शक्ति है। कोई एक सीमित क्षेत्र नहीं बल्कि छोटे से मैदान (संघ स्थान) से उठती और देश, दुनिया और ब्रह्माण्ड तक को एक सूत्र में देखने वाली दृष्टि है।

चिकित्सक की ख्याति क्लीनिक के नाम से ज्यादा रोग पहचानने की क्षमता और तदनुसार सटीक उपचार के गुण से होती है। यह बात संघ स्थापना के मामले में पूरी तरह ठीक बैठती है। विश्व में भारत के गौरवपूर्ण स्थान से पतन की वेदना और इसके पुनरुत्थान की राह तलाशने की उत्कृष्ट इच्छा लिये डाक्टर हेडगेवार ने १९५ से १९२४ तक गहन चिन्तन किया था। जब १९२५ में विजयादशमी के दिन भेदभाव से ग्रस्त, हतबल हिन्दू समाज की पहली उपचारशाला खुली तो इसके नाम का न कोई पट लगा, न ही पर्चा बँटा और नामकरण हुआ १७ अप्रैल, १९२६ को।

स्पष्ट है पहले काम खड़ा हुआ, नामकरण इसके छह माह बाद हुआ। याद रहे काम सदा नाम से पहले आता है। यह जो संस्कार संघ स्थापना की नींव में रखा गया आज ९० वर्ष बाद भी इस संगठन और इससे प्रेरणा पाने वालों को राह दिखाता है।

<u>लक्ष्य</u>-संघ का मुख्य लक्ष्य वर्गभेद और सीमाओं में उलझे बगैर समस्त विश्व के कल्याण और हित पर केन्द्रित है। राष्ट्र का जीवन लक्ष्य क्या होता है? हमारे प्राचीन ऋषियों ने पवित्र ग्रन्थों में सुस्पष्ट किया है- "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" (विश्व को श्रेष्ठ बनाना है।) "सर्वे भवन्तु सुखिनः"। यह उत्कृष्ट विचार केवल और केवल हिन्दू राष्ट्र में ही परिलक्षित है।

संघ की स्थापना के समय डॉ. हेडगेवार के सहयोगी दादाराव परमार्थ से जब संघ का अर्थ पूछा गया तो उन्होंने जवाब दिया था, "राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ हिन्दू राष्ट्र के उदय से जुड़ा जीवन लक्ष्य है।"

<u>संघशक्ति का दिव्य स्वरूप-</u> संघ शक्ति के दिव्यस्वरूप के मूल में संघ कार्य के लिए जीवन अर्पण करने वाले ऋषि तुल्य प्रचारक या गृहस्थ साधना के साथ-साथ संघ मार्ग पर बने रहने की तपस्या करनेवाले स्वयंसेवकों, कार्यकर्त्ताओं ने अनमोल प्रतिभाओं को साथ जोड़ते हुए बेजोड़ काम खड़ा किया। अस्तुः, हर प्रान्त और पृष्ठभूमि से संघ की ओर कदम बढ़े। यही

कारण है कि आज समाज जीवन की हर दिशा में संघ विचार और प्रेरणा से भरे कार्यकर्त्ता, प्रकल्प और संस्थाएँ दिखायी देते हैं। समाज में संघ अपने सिद्धान्त के पाँच प्रमुख घटकों के तहत काम करता है- ग्राम विकास, गो-सेवा, सामाजिक समरसता, कुटुम्ब प्रबोधन एवं धर्म जागरण समन्वय। इस प्रकार, स्वयंसेवकों के अथक प्रयासों से समाज का हर वर्ग नव चेतना के युग में प्रवेश करता है। आज शिक्षा से लेकर रोजगार, संस्कृति से लेकर विज्ञान, अर्थशास्त्र से लेकर राजनीति तक के क्षेत्रों में ८० से अधिक संगठन स्वयंसेवकों द्वारा कार्यरत हैं। इनकी एक मात्र आकांक्षा है-

"न त्वहं कामये राज्यं न स्वर्गं न पुनर्भ। कामये दुःख तप्तानां प्राणिनामार्तिनाशनम्।।

अर्थात् "न मुझे राज्य की इच्छा है, न स्वर्ग की और न मोक्ष की। मैं तो केवल दुःखों से संतृप्त प्राणिमात्र की व्यथा हरना चाहता हूँ।"

"परं वैभवं नेतुमेतत् स्वराष्ट्रं" का संकल्प लेकर "इदम् राष्ट्राय इदम् न मम्" की भावना से अपना समस्त जीवन राष्ट्र देव के श्रीचरणों में समर्पित करनेवाले ज्योतिपुञ्जों का प्रकटीकरण करने की ओर अग्रसर है।

जैसा कि अनुभव सिद्ध है, दूर से देखने पर दृष्टिभ्रम हो सकता है। संघ के नजदीक आइए। देखिये, अनुभव कीजिए, जुड़िए। संघ समझ में अवश्य आयेगा।

जिस प्रकार सूर्य के प्रकाश की तुलना दीपक से नहीं की जा सकती है, अनन्त आकाश के तारागणों की संख्या नहीं बतायी जा सकती है, सागर को अँजुली में नहीं समेटा जा सकता है, उसी प्रकार ९० वर्ष की संघ यात्रा को एक पुस्तक में नहीं समाहित किया जा सकता है। वास्तव में यह तो एक पिपीलिका (चींटी) द्वारा विशाल पृथ्वी की परिक्रमा करने का तुच्छ प्रयास ही है।

"कुछ वर्ष पहले, संघ के संस्थापक जीवित थे, आपके शिबिर में गया था। वहाँ पर आपके अनुशासन, अस्पृश्यता का पूर्णरूप से अभाव और कठोर, सादगीपूर्ण जीवन देखकर काफी प्रभावित हुआ। सेवा और स्वार्थ त्याग के उच्च आदर्शों से प्रेरित यह संगठन दिन-प्रतिदिन अधिक शक्तिवान हुए विना नहीं रहेगा।"

- महात्मा गान्धी

"संघ के स्वयंसेवक एक-दूसरे की जाति नहीं पूछते। जातिवाद की भावना यहाँ सचमुच समाप्त है, ऊँच-नीच, छुआछूत से बिल्कुल दूर। यह बहुत ही आश्चर्यजनक है।"

- डॉ. भीमराव अम्बेडकर (पूना के संघ शिबिर में)

03-27-2017

स्वतन्त्रता संग्राम : डॉ. हेडगेवार और संघ

एक षड्यन्त्र के तहत यह प्रचारित किया जाता है कि आजादी के आन्दोलन में संघ का कोई योगदान नहीं है, जबकि इतिहास गवाह है कि डॉ हेडगेवार सहित अनेक स्वयंसेवकों ने स्वतन्त्रता की लड़ाई लड़ते हुए जेल की यातनाएँ सही थीं।

कुछ समय पूर्व राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख डॉ. मनमोहन वैद्य से एक पत्रकार मिलने आये। बातचीत में उन्होंने पूछा कि स्वतन्त्रता आन्दोलन में संघ का सहभाग क्या था? शायद वह भी संघ के खिलाफ चलने वाले असत्य प्रचार के शिकार थे। डॉ. मनमोहन वैद्य ने प्रतिप्रश्न किया कि आप स्वतन्त्रता आन्दोलन किसे कहते हैं? कुछ क्षण पत्रकार महोदय बोल ही नहीं सके। फिर धीरे से शंकित स्वर में कहा, वही जो महात्मा गान्धी ने किया था। डॉ. मनमोहन वैद्य ने पूछा, तो क्या लाल, बाल, पाल त्रिमूर्ति का कोई योगदान नहीं था? क्या सुभाष बाबू की कोई भूमिका स्वतन्त्रता आन्दोलन में नहीं थी? पत्रकार महोदय चुप थे। फिर डॉ. मनमोहन जी ने पूछा कि गान्धी जी के नेतृत्व में कितने सत्याग्रह हुए? पत्रकार महोदय अनजान थे। उन्हें जानकारी नहीं थी। मनमोहन जी ने कहा, तीन हुए १९२१ , १९३० , १९४२ ; परन्तु संघ संस्थापक डॉ. हेडगेवार ने संघ स्थापना से पहले १९२१ और बाद के १९३० के सत्याग्रह में भाग लिया था और उन्हें कारावास भी सहना पड़ा। जबकि डॉक्टर हेडगेवार की मृत्यु १९४० में हुई।

वास्तव में योजनाबद्ध तरीके से आधा इतिहास बताने का प्रयास चल रहा है। सामान्य जनों के बीच में यह कुप्रचारित किया जा रहा है कि स्वतन्त्रता केवल कांग्रेस के और १९४२ के सत्याग्रह के कारण मिली है और किसी ने कुछ नहीं किया। यह बात पूर्ण सत्य नहीं है।

<u>जन्म से ही देशभक्त-</u> अब संघ की बात करनी है तो डॉ. हेडगेवार के जीवन से ही प्रारम्भ करना उचित रहेगा। डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार का जन्म नागपुर में १८८९ में हुआ। अपने देश में अंग्रेजों के शासन से बचपन से ही घृणा करने वाले तीसरी कक्षा के विद्यार्थी केशव ने महारानी विक्टोरिया के राज्यारोहण के हीरक महोत्सव के निमित्त स्कूल में बाँटी गयी मिठाई को कचरे के डिब्बे में फेंका तथा रिस्ले सेक्युलर नाम से 'वन्दे मातरम्' के सार्वजनिक उद्घोष पर पाबन्दी के अन्याय पूर्ण आदेश के विरोध में नीलसिटी विद्यालय में सरकारी निरीक्षक के सामने अपनी कक्षा के सभी विद्यार्थियों द्वारा 'वन्देमातरम्' उद्घोष करवाकर विद्यालय प्रशासन का रोष और माफी न माँगने पर सजा के नाते विद्यालय से निष्कासन भी मोल लिया था। उसी समय यवतमाल में बाबा साहेब परांजपे के स्कूल में डॉ. मुंजे का पत्र दिखाकर प्रवेश लिया लेकिन अंग्रेजों ने इसे भी बन्द करवा दिया। इसके बाद केशव ने पुणे से मैट्रिक किया। १९१० में कलकत्ता गये जहाँ क्रान्तिकारियों से अच्छे सम्बन्ध बनाये और क्रान्तिकारियों की सर्वोच्च समिति अनुशीलन समिति के सक्रिय कार्यकर्त्ता बने। १९१६ के शुरू में डाक्टर बनकर नागपुर आये।

संघ संस्थापक डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार जन्मजात देशभक्त और प्रथम श्रेणी के

03-Jul-2017 10:46

क्रान्तिकारी थे, वे युगांतर और अनुशीलन समिति जैसे प्रमुख विप्लवी संगठनों में डॉ. पाण्डुरंग खानखोजे, अरविन्द, वारीन्द्र घोष, त्रैलोक्यनाथ चक्रवर्ती आदि के सहयोगी रहे। रासबिहारी बोस और शचीन्द्र सान्याल द्वारा प्रथम विश्वयुद्ध के समय १९१५ में सम्पूर्ण भारत की सैनिक छावनियों में क्रान्ति की योजना में वे मध्य भारत के प्रमुख थे। उस समय स्वतन्त्रता आन्दोलन का मंच कांग्रेस थी। उसमें भी प्रमुख भूमिका निभायी। १९२१ और १९३० के सत्याग्रहों में भाग लेकर कारावास का दण्ड पाया।

१९२५ में विजयादशमी पर संघ स्थापना करते समय डॉ. हेडगेवार जी का उद्‌देश्य राष्ट्रीय स्वाधीनता ही था। संघ के स्वयंसेवकों को जो प्रतिज्ञा दिलायी जाती थी, उसमें राष्ट्र की स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए तन-मन-धन और प्रामाणिकता से प्रयत्नपूर्णतः आजन्मरत रहने का संकल्प होता था। संघ स्थापना के तुरन्त बाद से ही स्वयंसेवक स्वतन्त्रता संग्राम में अपनी भूमिका निभाने लगे थे।

<u>क्रान्तिकारी स्वयंसेवक-</u> संघ का वातावरण देशभक्तिपूर्ण था। १९२६ -२७ में जब संघ नागपुर और आसपास तक ही पहुँचा था, उसी काल के प्रसिद्ध क्रान्तिकारी राजगुरु नागपुर की भोंसले वेदशाला में पढ़ते समय स्वयंसेवक बने। इसी समय भगतसिंह ने भी नागपुर में डॉक्टर जी से भेंट की थी। दिसम्बर १९२८ के ये क्रान्तिकारी पुलिस उपकप्तान सांडर्स का वध करके लाला लाजपत राय की हत्या का बदला लेकर लाहौर से सुरक्षित आ गये थे। डॉ. हेडगेवार जी ने राजगुरु को उमरेड में भैय्याजी दाणी (जो बाद में संघ के अ.भा. सरकार्यवाह रहे) के फार्म हाउस में छिपने की व्यवस्था की थी। १९२८ में साइमन कमीशन के भारत आने पर पूरे देश में उसका बहिष्कार हुआ। नागपुर में हड़ताल और प्रदर्शन करने में संघ के स्वयंसेवक अग्रिम पंक्ति में थे।

महापुरुषों का समर्थन- १९२८ में विजयादशमी उत्सव पर भारत की असेम्बली के प्रथम अध्यक्ष और सरदार पटेल के बड़े भाई विट्‌ठल भाई पटेल जी उपस्थित थे। अगले वर्ष १९२९ में महामना मदनमोहन मालवीय जी ने उत्सव में उपस्थित हो संघ को अपना आशीर्वाद दिया। स्वतन्त्रता संग्राम की अनेक प्रमुख विभूतियाँ संघ के साथ स्नेह सम्बन्ध रखती थीं। १९२९ में डॉ. हेडगेवार से सुभाष चन्द्र बोस ने भेंट की; लम्बा विचार विमर्श हुआ जो अंत तक चला।

<u>शाखाओं में स्वतन्त्रता दिवस-</u>३१ दिसम्बर, १९२९ को लाहौर में कांग्रेस ने प्रथम बार पूर्ण स्वाधीनता का लक्ष्य घोषित किया और ६ जनवरी, १९३० को देशभर में स्वतन्त्रता दिवस के रूप में मनाने का निश्चय किया गया।

डॉ. हेडगेवार ने दस वर्ष पूर्व १९२० में नागपुर में एक कांग्रेस के अधिवेशन में पूर्ण स्वतन्त्रता सम्बन्धी प्रस्ताव रखा था, पर तब वह पारित नहीं हो सका था। १९३० में कांग्रेस द्वारा यह लक्ष्य स्वीकार करने पर आनन्दित हुए डॉ. हेडगेवार जी ने संघ की सभी शाखाओं पर परिपत्र भेजकर रविवार २६ जनवरी, १९३० को सायं ६ बजे राष्ट्रध्वज वन्दन करने और 'स्वतन्त्रता की कल्पना और आवश्यकता' विषय पर व्याख्यान की सूचना करवायी। इस आदेश के अनुसार संघ की सब शाखाओं पर स्वतन्त्रता दिवस मनाया गया।

सत्याग्रह-६ अप्रैल, १९३० को दाँडी में समुद्र तट पर गान्धी जी ने नमक कानून तोड़ा और लगभग ८ वर्ष बाद कांग्रेस ने दूसरा जनान्दोलन प्रारम्भ किया। संघ का कार्य अभी मध्य भारत प्रान्त में ही प्रभावी हो पाया था। यहाँ नमक कानून के स्थान पर जंगल कानून तोड़कर सत्याग्रह करने का निश्चय हुआ। डॉ. हेडगेवार जी संघ के सरसंघचालक का दायित्व डॉ. परांजपे को सौंप स्वयं अनेक स्वयंसेवकों के साथ सत्याग्रह करने गये।

जुलाई १९३० में सत्याग्रह हेतु यवतमाल जाते समय पुसद नामक स्थान पर आयोजित जनसभा में डॉ. हेडगेवार जी के सम्बोधन में स्वतन्त्रता संग्राम में संघ का दृष्टिकोण स्पष्ट होता है। उन्होंने कहा था- "स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए अंग्रेजों के बूट की पॉलिश करने से लेकर उनके बूट को पैर से निकालकर उससे उनके ही सिर को लहुलुहान करने तक के सब मार्ग मेरे स्वतन्त्रता प्राप्ति के साधन हो सकते हैं। मैं तो इतना ही जानता हूँ कि देश को स्वतन्त्र कराना है।"

डॉ. हेडगेवार जी के साथ गये सत्याग्रही जत्थे में अप्पा जी जोशी (बाद में सरकार्यवाह) दादाराव परमार्थ (बाद में मद्रास में प्रथम प्रान्त प्रचारक) आदि १२ स्वयंसेवक शामिल थे। उनको ६ मास का सश्रम कारावास दिया गया। उसके बाद अ.भा. शारीरिक शिक्षण प्रमुख (सर सेनापति) मार्तण्ड जोग जी, नागपुर के जिला संघचालक अप्पा जी हल्दे आदि अनेक कार्यकर्त्ताओं ओर शाखाओं के स्वयंसेवकों के जत्थों ने भी सत्याग्रहियों की सुरक्षा के लिए १०० स्वयंसेवकों की टोली बनायी, जिसके सदस्य सत्याग्रह के समय उपस्थित रहते थे। ८ अगस्त को गढ़वाल दिवस पर धारा १४४ तोड़कर जुलूस निकालने पर पुलिस की मार से अनेक स्वयंसेवक घायल हुए। ६ सितम्बर १९३० को सत्याग्रही स्वयंसेवकों को अमानुषिक यातनाएँ दी गयीं। बेतों से खाल उधेड़कर मांस में ही बेंत चुभोये गये।

विजयादशमी १९३१ को डाक्टर जी जेल में थे, उनकी अनुपस्थिति में गाँव-गाँव में संघ की शाखाओं पर एक सन्देश पढ़ा गया, जिसमें कहा गया था- "देश की परतन्त्रता नष्ट होकर जब तक सारा समाज बलशाली और आत्मनिर्भर नहीं होता, तब तक रे मना! तुझे निजी सुख की अभिलाषा का अधिकार नहीं।"

जनवरी १९३२ में विप्लवी दल द्वारा सरकारी खजाना लूटने के लिए हुए बालाघाट काण्ड में वीरबाघा जतिन (क्रान्तिकारी जतिन्द्रनाथ) अपने साथियों सहित शहीद हुए और बाला जी हुद्दार आदि कई क्रान्तिकारी बन्दी बनाये गये। हुद्दार जी उस समय संघ के अ.भा. सरकार्यवाह थे।

संघ पर प्रतिबन्ध- संघ के विषय में गुप्तचर विभाग की रपट के आधार पर मध्य भारत सरकार (जिसके क्षेत्र में नागपुर भी था) ने १५ दिसम्बर १९३२ को सरकारी कर्मचारियों के संघ में भाग लेने पर प्रतिबन्ध लगा दिया।

अंग्रेज सरकार ने बढ़ती संघशक्ति को रोकने की दृष्टि से डॉ. हेडगेवार जी के देहान्त के बाद ५ अगस्त १९४० को सरकार ने भारत सुरक्षा कानून की धारा ५६ व ५८ के अन्तर्गत संघ की सैनिक वेशभूषा और प्रशिक्षण पर पूरे देश में प्रतिबन्ध लगा दिया।

१९४२ को भारत छोड़ो आन्दोलन- संघ के स्वयंसेवकों ने स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए

08277201710

भारत छोड़ो आन्दोलन में भी सक्रिय भूमिका निभायी। विदर्भ के अष्टीचिमूर क्षेत्र में समानान्तर सरकार स्थापित कर दी। अमानुषिक अत्याचारों का सामना किया। उस क्षेत्र में एक दर्जन से अधिक स्वयंसेवकों ने अपना जीवन बलिदान किया। नागपुर के निकट रामटेक के तत्कालीन नगर कार्यवाह रमाकान्त केशव देशपाण्डे उपाख्य बाला साहब देशपाण्डे जी को आन्दोलन में भाग लेने पर मृत्युदण्ड सुनाया गया। आम माफी के समय मुक्त होकर उन्होंने वनवासी कल्याण आश्रम की स्थापना की।

देश के कोने-कोने में स्वयंसेवक जूझ रहे थे। मेरठ जिले में मवाना तहसील पर झण्डा फहराते स्वयंसेवकों पर पुलिस ने गोली चलाई, जिसमें अनेक स्वयंसेवक घायल हुए। आन्दोलनकारियों की सहायता और शरण देने का कार्य भी बहुत महत्त्व का था। केवल अंग्रेज सरकार के गुप्तचर ही नहीं, कम्युनिस्ट पार्टी के कार्यकर्त्ता भी अपनी पार्टी के आदेशानुसार देशभक्तों को पकड़वा रहे थे। ऐसे में जयप्रकाश नारायण और अरुणा आसफ अली दिल्ली के संघचालक लाला हंसराज गुप्त के यहाँ आश्रय प्राप्त करते थे। प्रसिद्ध समाजवादी अच्युत पटवर्धन और साने गुरुजी ने पूना के संघचालक भाऊ साहब देशमुख जी के घर पर केन्द्र बनाया था।

पत्री सरकार गठित करने वाले प्रसिद्ध क्रान्तिकारी नाना पाटिल को औंध (जिला सतारा) में संघचालक पं. सातवलेकर जी ने आश्रय दिया।

<u>ब्रिटिश सरकार के गुप्तचर विभाग की रिपोर्ट :</u>

"१९४३ के अन्त में संघ के विषय में ब्रिटिश सरकार के गुप्तचर विभाग ने अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की जो राष्ट्रीय अभिलेखागार, दिल्ली की फाइलों में सुरक्षित हैं और जो सिद्ध करता है कि संघ योजनापूर्वक स्वतन्त्रता प्राप्ति की ओर बढ़ रहा था। प्रमाण प्रस्तुत है-

मई, जून १९४३ , संघ कार्य तेजी से फैल रहा था। उसके अधिकारी शिक्षण शिविर (O.T.C.) ७ स्थानों पर लगे। पूना शिविर में गोलवलकर ने समारोप कार्यक्रम में कहा- त्याग का सर्वोच्च प्रकार/हुतात्मा (देश के लिए शहीद) होना है, उन्होंने रामदास का दोहा सुनाया जिसमें कहा- हिन्दुओं को धर्म के लिए प्राण न्योछावर कर देना चाहिए पर उससे पूर्व अधिक से अधिक शत्रुओं को मार दें।

इन शिविरों में स्वयंसेवकों से कहा गया- वे यहाँ सैनिक जीवन का अनुभव करने आये हैं, शीघ्र ही विदेशियों के साथ शक्ति परीक्षण होगा।

१२ सितम्बर, ४३ को बाबा साहब आप्टे ने जबलपुर में गुरुदक्षिणा उत्सव में श्रोताओं से कहा- अंग्रेजों का आचरण असहनीय है, देश को आजादी के लिए तैयार हो जाना चाहिए।

इन शिविरों में लड़ाकू और खतरनाक किस्म की शिक्षा दी जाती है बताया जाता है कि संगठन के शक्तिशाली होने पर अंग्रेजों से दासता मुक्ति का संघर्ष शुरू किया गया।

<u>क्रान्तिकारियों के साथ संघ के सम्बन्ध स्पष्ट हैं-</u> पूना के शिविर में और राष्ट्र सेविका समिति के अमरावती शिविर में अंग्रेजों के खिलाफ भड़काने वाले राजा महेन्द्र प्रताप का चित्र लगाया गया। शिविरों तथा कार्यक्रमों में पूर्ण गोपनीयता बरती जाती है।

२० सितम्बर, ४३ को नागपुर में हुई गुप्त बैठकों में जापानी हमले के समय संघ की भूमिका के विषय में विचार किया गया (इस समय आजाद हिन्द फौज का निर्माण हो रहा था।)"

ब्रिटिश सरकार इस बात से बहुत चिन्तित थी कि "संघ हिन्दू रियासतों में पैर फैला रहा है, इसलिए सभी ब्रिटिश रेजीडेन्टों को निर्देश दिये गये कि वे अपने-अपने नरेशों पर दबाव डालकर संघ की गतिविधियों को रोकें उसके कार्य व प्रमुख कार्यकर्त्ताओं के विषय में जानकारी एकत्र करें। प्राप्त सूचनाओं के विश्लेषण से गुप्तचर विभाग इस निष्कर्ष पर पहुँचा था कि संघ का, राजनीति से सम्बन्ध नहीं, हमारा कार्य सांस्कृतिक है- जैसे वाक्य वास्तविक उद्देश्य पर आवरण डालने के लिए है। संघ का वास्तविक उद्देश्य- अंग्रेजों को भारत से खदेड़ कर देश को स्वतन्त्र करना है।"

आश्चर्य की बात है कि विदेशी शासक संघ के राष्ट्रभक्ति और स्वतन्त्रता प्राप्ति की उसकी तैयारी को समझ गये थे, पर हमारे अपने लालबुझक्कड़ बुद्धिजीवी आज भी आजादी की लड़ाई में संघ की भूमिका के विषय में अज्ञानी हैं।

१९४३ में गान्धी जी दिल्ली की भंगी कॉलोनी स्थित बिरला जी के एक भवन में ठहरे थे, जिसमें संघ का कार्यालय भी था। यहाँ सितम्बर माह में मुस्लिम लीगी गुण्डों ने गान्धी पर आक्रमण की कोशिश की थी। तब संघ के पाँच सौ कार्यकर्त्ताओं ने दिन-रात पहरा देकर गान्धी की सुरक्षा सुनिश्चित की थी।

१९४७ में देश का दुर्भाग्यपूर्ण विभाजन हुआ। इस समय पंजाब, बंगाल तथा अन्य क्षेत्रों में निरीह हिन्दू समाज को बचाने एवम् हिन्दू शरणार्थियों के पुनर्वास कार्य में संघ ने अथक योगदान किया। पाकिस्तान क्षेत्र में संघ के पाँच हजार कार्यकर्त्ता हिन्दू शरणार्थियों की रक्षा में मारे गये। अक्टूबर १९४७ में कश्मीर पर हुए आक्रमण के विरुद्ध संघ ने भारतीय सेना को पग-पग पर सहायता दी। यहाँ के मोर्चों पर भी उनके स्वयंसेवक शहीद हुए।

नव-स्वतन्त्र भारत की आजादी खत्म कर उसे पुनः गुलाम बनाने का एक षड्यन्त्र मुस्लिम लीग ने १५ अगस्त, १९४७ के तुरन्त बाद रचा था। भारतरत्न पुरस्कार के प्रथम प्राप्तकर्त्ता महान् विद्वान् डॉ. भगवान दास ने इस सम्बन्ध में ६ अक्टूबर १९४८ को लिखा था- "मुझे विश्वसनीय जानकारी है कि आर.एस.एस. के नवयुवकों ने जवाहरलाल नेहरू और सरदार पटेल को समय रहते लीग के उस षड्यन्त्र की सूचना दे दी थी, जिसके तहत १० सितम्बर १९४७ को लीग दिल्ली में सशस्त्र विद्रोह करके भारत सरकार के मन्त्रियों और बड़े अधिकारियों की हत्या कर देती, लाल किले पर पाकिस्तानी झण्डा फहरा देती और हिन्दुस्तान कब्जे में ले लेती। यदि ये देशभक्त और कर्त्तव्यनिष्ठ तरुण नेहरू और पटेल को ठीक समय पर सूचना न देते, तो आज कोई भारत सरकार न होती, सारे देश का नाम बदलकर पाकिस्तान हो जाता, दसियों लाख हिन्दू मारे जाते, उससे अधिक इस्लाम में धकेल दिये जाते और भारत फिर गुलाम बन जाता। इस सबका निष्कर्ष क्या है? साफ तौर पर यह कि हमारी सरकार लाखों संघ-कार्यकर्त्ताओं की राष्ट्रवादी शक्ति का उपयोग करे, उसे कुठिंत न करे।"

डॉ. भगवानदास ने उक्त शब्द तब लिखे थे, जब संघ पर स्वतन्त्र भारत की पहली

सरकार ने राजनीतिक स्वार्थ में अन्धे होकर प्रतिबन्ध लगा रखा था। स्वातन्त्र्य समर में शान्त रहकर, विना प्रतिफल की इच्छा के कुर्बानियाँ देने वाले राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने सरकारी द्वेष-नीति को नितान्त सहजता से लेते हुए देशहित में अपनी कार्यशीलता को बनाये रखा।

अविराम बढ़ रहा है संघ

-भैयाजी जोशी

- आप संघ की नौ दशकों की इस यात्रा को किस तरह देखते हैं और राष्ट्र जीवन में संघ का सबसे बड़ा योगदान कौन-सा मानते हैं?

जब यह कार्य प्रारम्भ हुआ तो विचार यही था कि जो भी काम करना है वह हिन्दू समाज के लिए करना है, हिन्दू समाज के बीच करना है और हिन्दू समाज के बल पर करना है। सामान्य व्यक्ति भी इसे कर सकता है, ऐसी कार्यपद्धति प्रारम्भ हुई। मैदान पर आयेंगे, खेलेंगे-कूदेंगे, गपशप करेंगे, गीत गायेंगे। कोई बौद्धिक चर्चाएँ, चिन्तन के विषय ज्यादा नहीं, सामान्य व्यक्ति कर सके, ऐसे कार्यक्रम।

संघ के योगदान के बारे में मैं तीन बातें कहना चाहूँगा। एक, कश्मीर से कन्याकुमारी तक सामान्य व्यक्ति में, यह हमारा राष्ट्र है, इस भाव को जगाने में सफलता मिली है। दूसरे, सामान्य व्यक्ति भी अपनी पहल से समाज के लिए कुछ कर सकता है, ऐसा विश्वास निर्माण हुआ है। तीसरे राष्ट्र के पुनर्निर्माण के सम्बन्ध में संघ ने प्रारम्भ से कहा है कि हम (समाज के सम्मुख उपस्थित) समस्याओं से परिचित हैं, इसलिए समस्याएँ खड़ी करने वाले लोग नहीं चाहिए। इस तरह संघ की सारी रचना से ऐसे व्यक्ति तैयार होते गये जिन्होंने समस्याओं के समाधान की दिशा में पहल की है।

- दैनन्दिन शाखा पद्धति का विचार संघ का है या फिर कहीं कोई ऐसा प्रयोग विश्व में हुआ था, जिसका अनुसरण किया गया?

नहीं, विश्व में कहीं ऐसा नहीं हुआ। स्वामी विवेकानन्द ने कहा था कि समाज जागरण के छोटे-छोटे केन्द्र बनने चाहिए। उन्होंने यह भी कहा था कि मैं देख रहा हूँ कि देश के मध्य भाग में इसका प्रारम्भ होगा। तो उनके विचारों का कुछ प्रभाव रहा है। संघ जो कार्य करना चाहता है, वह इस देश में किसी न किसी रूप में चलता आया है। इसीलिए डॉ. हेडगेवार ने कहा कि "मैं कुछ नया करने नहीं जा रहा हूँ।" यह कहते हुए उन्होंने संघ कार्य को हजारों वर्षों से चल रहे प्रयासों की शृंखला में जोड़ दिया। जहाँ हिन्दू हैं वहाँ जाना है और इसके लिए नागपुर से बाहर निकला संघ।

- ९० वर्ष की इस यात्रा में बहुत से विघ्न आये, फिर भी संघ कार्य निरन्तर बढ़ता गया। यह केसे सम्भव हुआ?

इस यात्रा के कुछ चरण हैं। पहला है १९२५ से लेकर १९४० तक। इस कालखण्ड में हिन्दू समाज का संगठन हो सकता है, यह बात साबित हुई १९४८ तक संघ एक शक्ति के रूप में समाज जीवन में उभर रहा था। देश में स्वतन्त्रता पूर्व का जैसा वातावरण था, उसमें

03-27-2017 10:49

हिन्दुओं में विश्वास निर्माण करने वाला अगर कोई रहा होगा तो वह संघ था। बाकी राजनीतिक नेता चिन्ता कर रहे थे। मैं तीसरा चरण १९४८ से १९७५ तक मानता हूँ। यह कालखण्ड तीन बातों से महत्त्वपूर्ण है। एक, देश में कार्य का विस्तार लगभग सभी प्रान्तों में, सभी जिलों में पहुँच गया। दूसरे, संगठन की कार्यपद्धति परिष्कृत होकर निश्चित हो गया कि ऐसी पद्धति रहेगी। तीसरी बात यह कि संघ कार्य को एक वैचारिक अधिष्ठान प्राप्त हुआ कि आखिर संघ क्यों है? पूज्य गुरुजी १९७३ तक रहे, उनका योगदान इसमें सबसे अधिक है। १९७५ के बाद समाज परिवर्तन की प्रक्रिया प्रारम्भ करने का कालखण्ड है फिर वह राम जन्मभूमि आन्दोलन हो, जिसमें समाज की शक्ति खड़ी हुई, या उससे पहले १९६९ में उडुपि में हुआ संत सम्मेलन, जिसमें सामाजिक समरसता का विषय प्रमुख कि समाज की समस्याओं का कारण भेदभाव है, उसे समाप्त करना चाहिए। इसे सभी मतों, सम्प्रदायों, पंथों के संतों ने एक स्वर से घोषित किया। ओर १९७५ के आपातकाल के बाद इसकी व्यावहारिक प्रक्रिया शुरू हुई। १९७७ के बाद कार्य का विस्तार दोगुना हुआ, और कई तरह के सामाजिक प्रश्नों के उत्तर ढूँढने की प्रक्रिया आरम्भ हुई। १९९० में डॉ. हेडगेवार की जन्मशताब्दी अगला महत्त्वपूर्ण कदम थी। संघ के स्वयंसेवकों की समाज के प्रति जो भावनाएँ हैं उनका प्रकटीकरण होना चाहिए, और सेवा के रूप में होना चाहिए। उसके बाद हमने और भी कार्य क्षेत्रों में जाना शुरू किया। ९० से इसमें अधिक तेजी आयी तो सेवा विभाग, प्रचार विभाग, सम्पर्क विभाग, धर्म जागरण जैसे विविध कार्य प्रारम्भ हुए। अगला पड़ाव २००६ -०७ में आया। यह पूजनीय गुरुजी की जन्मशताब्दी का वर्ष था, जिसमें समाज के विभिन्न वर्गों में संघ गया। जाति भेद को हम कठिनाई मानते हैं। इस समूह का नेतृत्व करने वाले जो लोग हैं, उनको सारे परिवर्तन की प्रक्रिया से जोड़ना है तो हमें कुछ और कदम उठाने पड़ेंगे। इसलिए यह प्रक्रिया २००६ के बाद और अधिक गतिमान हुई। सामाजिक सद्भावना बैठकें चलीं। यह १९२५ से लेकर २०१५ तक की यात्रा है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ९० साल का हो चुका है। १९२५ में दशहरे के दिन डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना की थी।

साम्प्रदायिक हिन्दूवादी, फासीवादी और इसी तरह के अन्य शब्दों से पुकारे जाने वाले संगठन के तौर पर आलोचना सहते और सुनते हुए भी संघ को कम से कम ७-८ दशक हो चुके हैं।

दुनिया में शायद ही किसी संगठन की इतनी आलोचना की गयी होगी। वह भी विना किसी आधार के। संघ के खिलाफ लगा हर आरोप आखिर में पूरी तरह कपोल-कल्पना और झूठ साबित हुआ है। कोई शक नहीं कि आज भी कई लोग संघ को इसी नेहरूवादी दृष्टि से देखते हैं।

हालांकि खुद नेहरू को जीते-जी अपना दृष्टि-दोष ठीक करने का एक दुःखद अवसर तब मिल गया था, जब १९६२ में देश पर चीन का आक्रमण हुआ था। तब देश के बाहर पंचशील और लोकतन्त्र वगैरह आदर्शों के मसीहा जवाहरलाल न तो खुद को सँभाल पा रहे थे, न देश की सीमाओं को; अन्ततः संघ से सहयोग माँगा।

संघ के कुछ उल्लेखनीय कार्य

१. कश्मीर सीमा पर निगरानी, विभाजन पीड़ितों को आश्रय- संघ के स्वयंसेवकों ने अक्टूबर १९४७ से ही कश्मीर सीमा पर पाकिस्तानी सेना की गतिविधियों पर बगैर किसी प्रशिक्षण के लगातार नजर रखी। यह काम न नेहरू-माउण्टबेटन सरकार कर रही थी, न हरिसिंह सरकार। उसी समय, जब पाकिस्तान सेना की टुकड़ियों ने कश्मीर की सीमा लाँघने की कोशिश की, तो सैनिकों के साथ कई स्वयंसेवकों ने भी अपनी मातृभूमि की रक्षा करते हुए लड़ाई में प्राण दिये थे। विभाजन के दंगे भड़कने पर, जब नेहरू सरकार पूरी तरह हैरान-परेशान थी, संघ ने पाकिस्तान से जान बचाकर आये शरणार्थियों के लिए ३००० से ज्यादा राहत शिविर लगाये थे।

२. कश्मीर का विलय- कश्मीर के महाराजा हरिसिंह विलय का फैसला नहीं कर पा रहे थे और उधर कबाइलियों के वेष में पाकिस्तानी सेना सीमा में घुसती जा रही थी, तब नेहरू सरकार तो- हम क्या करें वाली मुद्रा में- मुँह बिचकाये बैठी थी। सरदार पटेल ने गुरु गोलवलकर जी से मदद माँगी।

गुरुजी श्रीनगर पहुँचे, महाराजा से मिले। इसके बाद महाराजा ने कश्मीर के भारत में विलय पत्र का प्रस्ताव दिल्ली भेज दिया। क्या बाद में महाराजा हरिसिंह के प्रति देखी गयी नेहरू की नफरत की एक जड़ यहाँ थी?

३. १९६२ का युद्ध- सेना की मदद के लिए देश भर से संघ के स्वयंसेवक जिस उत्साह से सीमा पर पहुँचे, उसे पूरे देश ने देखा और सराहा। स्वयंसेवकों ने सरकारी कार्यों में और विशेष रूप से जवानों की मदद में पूरी ताकत लगा दी- सैनिक आवाजाही मार्गों की चौकसी, प्रशासन की मदद, रसद और आपूर्ति में मदद, और यहाँ तक कि शहीदों के परिवरों को भी चिन्ता की।

४. नेहरू के आमन्त्रण पर गणतन्त्र दिवस पर संघ के स्वयंसेवकों द्वारा परेड- जवाहर लाल नेहरू को १९६३ में २६ जनवरी की परेड में संघ को शामिल होने का निमन्त्रण देना पड़ा। परेड करनेवालों को आज भी महीनों तैयारी करनी होती है, लेकिन मात्र दो दिन पहले मिले निमन्त्रण पर ३५०० स्वयंसेवक गणवेश में उपस्थित हो गये। निमन्त्रण दिये जाने की आलोचना होने पर नेहरू ने कहा- 'यह दर्शाने के लिए कि केवल लाठी के बल पर भी सफलतापूर्वक बम और चीनी सशस्त्र बलों से लड़ा जा सकता है, विशेष रूप से १९६३ के गणतन्त्र दिवस परेड में भाग लेने के लिए आरएसएस को आकस्मिक आमन्त्रित किया गया।'

५. १९६५ के युद्ध में कानून-व्यवस्था सँभाली- पाकिस्तान से युद्ध के समय लालबहादुर शास्त्री को भी संघ याद आया था। शास्त्री जी ने कानून-व्यवस्था की स्थिति सँभालने में मदद देने और दिल्ली का यातायात नियन्त्रण अपने हाथ में लेने का आग्रह किया, ताकि इन कार्यों से मुक्त किये गये पुलिसकर्मियों को सेना की मदद में लगाया जा सके। घायल जवानों के लिए सबसे पहले रक्तदान करने वाले भी संघ के स्वयंसेवक थे। युद्ध के दौरान कश्मीर की हवाईपट्टियों से बर्फ हटाने का काम संघ के सवयंसेवकों ने किया था।

६. गोवा के विलय में निर्णायक भूमिका- दादरा, नगर हवेली और गोवा के भारत विलय में संघ की निर्णायक भूमिका थी- २१ जुलाई, १९५४ को दादरा को पुर्तगालियों से मुक्त कराया गया, २८ जुलाई को नरोली और फिपारिया मुक्त कराये गये और फिर राजधानी सिलवासा मुक्त करायी गयी। संघ के स्वयंसेवकों ने २ अगस्त १९५४ की सुबह पुर्तगाल का झण्डा उतारकर भारत का तिरंगा फहराया, पूरा दादरा नगर हवेली पुर्तगालियों के कब्जे से मुकत कराकर भारत सरकार को सौंप दिया। संघ के स्वयंसेवक १९५५ से गोवा मुक्ति संग्राम में प्रभावी रूप से शामिल हो चुके थे। गोवा में सशस्त्र हस्तक्षेप करने से नेहरू के इनकार करने पर जगन्नाथ राव जोशी के नेतृत्व में संघ के कार्यकर्त्ताओं ने गोवा पहुँचकर आन्दोलन शुरू किया, जिसका परिणाम जगन्नाथ राव जोशी सहित संघ के कार्यकर्त्ताओं को दस वर्ष की सजा सुनाये जाने में निकला, हालत बिगड़ने पर अन्ततः भारत को सैनिक हस्तक्षेप करना पड़ा और १९६१ में गोवा आजाद हुआ।

७. आपातकाल- १९७५ से १९७७ के बीच आपातकाल के खिलाफ संघर्ष और जनता पार्टी के गठन तक में संघ की भूमिका की याद अब भी कई लोगों के लिए ताजा है। सत्याग्रह में हजारों स्वयंसेवकों की गिरफ्तारी के बाद संघ के कार्यकर्त्ताओं ने भूमिगत रह कर आन्दोलन चलाना शुरू किया। आपातकाल के खिलाफ पोस्टर सड़कों पर चिपकाना, जनता को सूचनाएँ देना और जेलों में बन्द विभिन्न राजनीतिक कार्यकर्त्ताओं-नेताओं के बीच संवाद सूत्र का काम संघ कार्यकर्त्ताओं ने सँभाला। जब लगभग सारे ही नेता जेलों में बन्द थे, तब सारे दलों का विलय कराकर जनता पार्टी का गठन करवाने की कोशिशें संघ की ही मदद से चल सकी थीं।

८. सेवा कार्य- १९७१ में ओडिशा में आये भयंकर चक्रवात से लेकर भोपाल की गैस त्रासदी तक, १९८४ में हुए सिख विरोधी दंगों से लेकर गुजरात के भूकम्प, सुनामी की प्रलय, उत्तराखण्ड की बाढ़ और कारगिल युद्ध के घायलों की सेवा तक-संघ ने राहत और बचाव का काम हमेशा सबसे आगे होकर किया है। भारत में ही नहीं, नेपाल, श्रीलंका और सुमात्रा तक में।

९. बहुआयामी, सर्वस्पर्शी तथा देशव्यापी-आज नगरीय क्षेत्रों की झुग्गी-झोंपड़ियों और पिछड़े हुए ग्रामीण क्षेत्रों में अपने सेवा कार्य चल रहे हैं। साथ ही, अपने देश में १० करोड़ जनजातीय बन्धु हैं, सरकार जिन्हें आदिवासी कहती है, ऐसे क्षेत्रों में भी बड़ी संख्या में सेवा कार्य चलते हैं। दूर दराज के अंचलों में और जनजातीय पट्टियों में भी सेवा कार्य चल रहे हैं। असम, मेघालय, अरुणाचल, मणिपुर, इंफाल, त्रिपुरा ओर नागालैण्ड के ४,५०० गाँवों में ५,००० स्वास्थ्य मित्र/आरोग्य मित्र काम कर रहे हैं जो सामान्य बीमारियों में दवा देते हैं और स्वास्थ्य चिकित्सा शिविर चलाते हैं। स्वास्थ्य क्षेत्र में सेवा कार्य करनेवाले चिकित्सकों का संगठन है जिसका नाम है 'नेशनल मेडिकोज ऑर्गनाइजेशन' (एन.एम.ओ.)। इसके द्वारा प्रतिवर्ष पूर्वांचल में 'धन्वंतरि सेवा यात्रा' का आयोजन होता है। हर साल सेवा भारती पूर्वांचल और एन.एम.ओ. मिलकर अप्रैल माह के आस-पास पूरे देश से मेडिकल स्नातकोत्तर की पढ़ाई

करने वाले छात्रों और चिकित्सकों को पूर्वोत्तर के अलग-अलग गाँवों में भेजते हैं। इसी प्रकार राजस्थान में मेडिकल स्नातकोत्तर की पढ़ाई करनेवाले चिकित्सक बन्धु वहाँ के जनजातीय क्षेत्र में प्रतिवर्ष दिसम्बर माह में ऐसी ही एक सेवा यात्रा निकालते हैं जिसका नाम है 'पूंजाभील सेवा यात्रा'। सैकड़ों चिकित्सक और उनके सहयोगी वहाँ जाते हैं और यह सेवा कार्य करते हैं। ऐसे ही जम्मू-कश्मीर में भी 'ऋषि कश्यप सेवा यात्रा' आयोजित होती है। इस प्रकार देश में ऐसे जितने भी दुर्गम क्षेत्र माने जाते हैं, वहाँ आज सारे सेवा कार्य चल रहे हैं। जनजातीय क्षेत्रों में मुख्य रूप से वनवासी कल्याण आश्रम काम करता है। इसके माध्यम से भी स्वास्थ्य और शिक्षा प्रकल्प चलते हैं। रोजगार प्रशिक्षण के प्रकल्प चलते हैं। ऐसे अलग-अलग प्रकार के कार्यों की संख्या १७-१८,००० से अधिक है।

विद्या भारती आज २५ हजार से ज्यादा स्कूल चलाता है, लगभग दो दर्जन शिक्षक प्रशिक्षण कालेज, डेढ़ दर्जन कालेज, १० से ज्यादा रोजागार एवं प्रशिक्षण संस्थाएँ चलाता है। केन्द्र और राज्य सरकारों से मान्यताप्राप्त इन सरस्वती शिशु मन्दिरों में लगभग ३० लाख छात्र-छात्राएँ पढ़ते हैं और १ लाख से अधिक शिक्षक पढ़ाते हैं। संख्या बल से भी बड़ी बात है कि ये संस्थाएँ भारतीय संस्कारों को शिक्षा के साथ जोड़े रखती हैं।

अकेला सेवा भारती देश भर के दूरदराज के और दुर्गम इलाकों में सेवा के एक लाख से ज्यादा काम कर रहा है। लगभग ३५ हजार एकल विद्यालयों में १० लाख से ज्यादा छात्र अपना जीवन सँवार रहे हैं। उदाहरण के तौर पर सेवा भारती में जम्मू कश्मीर से आतंकवाद से अनाथ हुए ५७ बच्चों को गोद लिया है जिनमें ३८ मुस्लिम और १९ हिन्दू बच्चे हैं।

१०. पुखरायाँ (कानपुर) रेल दुर्घटना में पीड़ितों की सहायता- दिनांक २० नवम्बर २०१६ को प्रातः ३.१० पर इन्दौर पटना एक्सप्रेस दुर्घटनाग्रस्त हो गयी। पुखरायाँ कानपुर देहात में हुए ट्रेन हादसे में मरने वालों की संख्या लगभग १५० एवं भारी संख्या में यात्री घायल हुए। घटना के तत्काल बाद २०० स्वयंसेवक घटना स्थल पर पहुँच कर राहत कार्य में लग गये। घटना स्थल के अतिरिक्त कानपुर के हैलट हॉस्पिटल एवं माती चिकित्सालय में ३०० से अधिक संघ के स्वयंसेवक सहायता राहत एवं घायलों की मदद कार्य हेतु प्रातः पहुँचकर भोजन, चाय, बिस्कुट का वितरण एवं घायलों को चिकित्सालय तक पहुँचानें हेतु वाहनों की व्यवस्था संघ के स्वयंसेवकों ने की। अपनों को खोज रहे लोगों को उनके सम्बन्धियों के बारे में जानकारी दी गयी कि कौन कहाँ भरती है। उल्लेखनीय है कि रेलवे की NDRS की टीम ने सबको रोककर केवल संघ के स्वयंसेवकों को राहत एवं बचाव कार्य करने दिया। रा.स्व.संघ के अखिल भारतीय बौद्धिक प्रमुख स्वान्त रंजन जी, प्रान्त प्रचारक अनिल जी, व्यवस्था प्रमुख विमल जी आदि भी घायलों का हालचाल लेने पहुँचे।

'मुसलमानों के प्रति घृणा फैलाने या उनके कत्लेआम करने का संघ पर लगाया जा रहा आरोप पूरी तरह निराधार व गलत है। मुसलमानों को चाहिए कि वे संघ से पारस्परिक प्रेम, सहकार तथा संगठन के गुणों की शिक्षा लें।'

- डॉ. जाकिर हुसैन पूर्व राष्ट्रपति

सामाजिक समरसता और संघ

यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि सामाजिक भेदभाव और विषमताओं को लेकर तनाव बढ़ रहा है इससे निबटने के लिए संघ का जन्म हुआ है। हमने जो रास्ता ढूँढ़ा है, वह परम्पराओं से भिन्न है। हमने भेदभाव, विषमताओं की चर्चा करने की बजाय कहा कि हम सब हिन्दू हैं। हिन्दू शब्द ही ऐसा है जो ऐसे भेदभाव और विषमताओं को मिटा सकता है; परन्तु संकुचित शक्तियाँ भी बहुत प्रभावी हैं जो इस भेदभाव, विषमता को बनाये रखने या खाई को बढ़ाने का काम करती हैं। यह हमारे सामने चुनौती है; परन्तु हमारा अनुभव ऐसा है इतने वर्षों में कि जहाँ-जहाँ संघ का कार्य प्रभावी रूप में खड़ा होता गया, वहाँ ऐसी विषमताएँ भी खत्म होती गयीं। हम किसी भी जाति-बिरादरी के हों, हमारा मूल हिन्दू है। हमारा नाम, भाषा, हमारे भगवान्, धर्मग्रन्थ, तीर्थ क्षेत्र, महापुरुष कौन-सी जाति बिरादरी के हैं? वह कहाँ से आयें वे जहाँ से आये उसका नाम है हिन्दू। इसका स्मरण हम जितना प्रभावी रूप से करेंगे, उतना ही इन समस्याओं का निवारण होगा।

समरसता के भाव जगाने में संघ की भूमिका

उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी में सामाजिक समरसता के अनेक प्रयास किये गये। स्वामी दयानन्द सरस्वती, स्वामी विवेकानन्द, श्री नारायण गुरु, स्वतन्त्र्यवीर सावरकर, महात्मा गान्धी, महात्माफुले, डॉ. अम्बेडकर आदि के समरसता के भाव को साकार करने में संघ ने अहम भूमिका निभायी।

१. रा.स्व.संघ की शाखा में तो प्रारम्भ से ही इसकी चिन्ता की गयी। संघ स्थान पर एकत्रित होकर कार्यक्रम करने से 'हम सब हिन्दू हैं' यह भाव प्रबल होता जाता है। परिणामतः किसी प्रकार का भेद हृदय में प्रवेश नहीं कर पाता। संघ के स्वयंसेवक कभी भी एक दूसरे की जाति, उपजाति की पूछताछ नहीं करते हैं। संघ संस्थापक डॉ. हेडगेवार ने कहा था 'हमें न तो अस्पृश्यता माननी है ओर न उसका पालन करना है।'

२. १९३८ में वर्धा में चल रहे एक शिविर में महात्मा गान्धी जी का आगमन हुआ। स्वयंसेवकों से पूछताछ करते हुए सबका परिचय हुआ। गान्धी जी ने इस बात की पूछताछ की कि क्या यहाँ जातिगत भेदभाव रखा जाता है? उनके पूछने पर शिविर में भाग लेने वाले तब हरिजन कहे जाने वाले बन्धुओं ने बताया कि यहाँ सभी के साथ समान एवं सम्मानपूर्वक व्यवहार होता है। छुआछूत का कोई सवाल ही नहीं उठता। इस पर महात्मा गान्धी जी ने प्रसन्नता व्यक्त की थी। इसका उल्लेख गान्धी जी के प्रकाशित पूर्ण वाङ्मय में है।

३. ८ मई १९७४ को पूना की प्रसिद्ध व्याख्यानमाला में पू. बाला साहब देवरस जी का अस्पृश्यता के विरुद्ध दिया गया वक्तव्य- 'यदि अस्पृश्यता (छुआछूत) पाप नहीं तो कुछ भी पाप नहीं है' सर्वत्र चर्चा का विषय बन गया था।

४. १९६९ में कर्नाटक प्रान्त में उडुपी में सम्मेलन सम्पन्न हुआ। पू. श्री गुरुजी के मार्गदर्शन में इस सम्मेलन की योजना बनी थीं अनेक संत और मठाधिपति इस सम्मेलन में उपस्थित थे। यह पहला अवसर था जब सभी उपस्थित महापुरुषों ने एक स्वर में प्रस्ताव पारित करते हुए कहा कि 'अस्पृश्यता कलंक है तथा इसे किसी भी धर्मग्रन्थ का समर्थन नहीं है। मम दीक्षा-हिन्दू रक्षा। मम मन्त्र समान्ता। सर्वे हिन्दु सहोदराः। न हिन्दू पतितो भवेत।' इस प्रकार की घोषणा करते हुए समाज की समरसता हेतु मार्गदर्शन किया।

५. १९८९ में अयोध्या में रामजन्मभूमि पर भव्य मन्दिर के शिलान्यास में प्रथम शिला श्री कामेश्वर चौपाल के हाथों स्थापित हुई, जो तथाकथित पिछड़ी जाति के माने जाते हैं

६. १७ मार्च १९९४ को काशी के डोम राजा श्री संजीत चौधरी के यहाँ श्री अशोक सिंघल महन्त अवेधनाथ, स्वामी प्रपन्नाचार्य सहित महासंत, मठाधिपतियों ने भोजन ग्रहण करके सामाजिक समरसता का अनूठा उदाहरण रखकर "हिन्दवः 'सोदरा' सर्वे"का उद्घोष सार्थक किया।

७. दादरी में विमान दुर्घटना में सभी मृत यात्री मुसलमान थे किन्तु संघ के स्वयंसेवक सबसे पहले पहुँचकर उनकी सेवा में जुट गये। कफन की व्यवस्था कर शवों को व्यवस्थित ढंग से रखा। उनके स्वजनों की भोजन एवं ठहरने की व्यवस्था की।

अस्तु समाज में समरसता के भाव तेजी से प्रस्फुटित हो रहे हैं अधीर और उतावले लोग भले ही निराशा का अनुभव करते हों, लेकिन यह मानना ही होगा कि सभी बातों का संकलित परिणाम होता ही है। इस बात को ध्यान में रखकर किसी प्रकार की उतावली न करते हुए प.पू. श्री गुरुजी के शब्दों में 'धीमे-धीमे जल्दी करो,' की पद्धति से काम करना होगा। सामाजिक समता की स्थापना रूपी गोवर्धन पर्वत को उठाने जैसे कार्य में बाल-गोपालों के समान सभी को अपनी-अपनी लाठी लगानी होगी।

'जब संघ हिन्दू या हिन्दुत्व शब्द का प्रयोग करता है तो उनके अनुसार उसका अभिप्राय धार्मिक आस्था नहीं, बल्कि भारतीय जीवनशैली होता है। मैं उसी उद्देश्य से जब भारतीय शब्द का प्रयोग करता हूँ तो संघ वालों को उस पर कोई आपत्ति नहीं होती है।

- आरिफ मोहम्मद खान

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवकों द्वारा

राष्ट्र सेवा में बढ़ते कदम-लक्ष्य एक, कार्य अनेक

कभी अनाम, अनजान, उपेक्षित और घोर विरोध का शिकार राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ आज भारत ही नहीं बल्कि पूरे विश्व में चर्चा एवं उत्सुकता का विषय बना हुआ है। संघ की इस यात्रा में ध्यान देने योग्य है कि कांग्रेस सरकार द्वारा तीन-तीन प्रतिबन्धों, कभी अत्यन्त शक्तिशाली और क्रूर रहे कम्युनिस्टों, ईसाई और इस्लामिक शक्तियों से एक साथ जूझते हुए आगे बढ़ा है। यह चमत्कार संघ के स्वयंसेवकों की त्याग, तपस्या और बलिदान के चलते ही हो सका है। आज देश-विदेश के अनेक विश्वविद्यालयों में संघ पर शोध हो रहा है। जिस प्रकार गोमुख को देखकर हरिद्वार की विशाल गंगा या छोटे से बीज को देखकर विराट वटवृक्ष की कल्पना भी कठिन होती है वैसे ही विजयादशमी सन् १९२५ को नागपुर में डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार के साधारण से घर में १५-२० लोगों में प्रारम्भ हुए संघ से आज के विशाल जनान्दोलन या राष्ट्रभक्ति के महाअभियान का रूप धारण कर चुके संघ की कल्पना भी कठिन है। आज संघ देशभक्तों की आशा तथा देश विरोधियों के लिए उनके रास्ते का रोड़ा बन गया है। संघ की साधारण सी दिखने वाली शाखा से अद्‌भुत व्यक्तित्व पैदा हुए हैं। शाखा से प्रेरणा प्राप्त स्वयंसेवकों पर संघ को ही नहीं तो पूरे देश को गर्व है। सामान्य किसान-मजदूर, क्लर्क से लेकर प्रशासनिक अधिकारी हो, सेना-पुलिस में उच्च अधिकारी हों या इतना ही नहीं तो न्यायाधीश से लेकर प्रधानमन्त्री तक स्वयंसेवक अपनी सेवाएँ राष्ट्र को समर्पित कर रहे हैं। कहने की जरूरत नहीं कि स्वयंसेवक अपनी प्रतिभा, कठोर परिश्रम एवं ईमानदारी के चलते लोगों को प्रेरणास्रोत बने हुए हैं।

संघ संस्थापक डॉ. हेडगेवार कहते थे कि संघ कुछ नहीं करेगा अर्थात् केवल शाखा चलायेगा लेकिन स्वयंसेवक कुछ नहीं छोड़ेगा अर्थात् देश और समाज के लिए आवश्यक हर कार्य करेगा। संघ की शाखा से देशभक्ति, अनुशासन तथा अपने समाज के प्रति अपनेपन का पाठ पढ़कर स्वयंसेवक समाज जीवन के लगभग प्रत्येक क्षेत्र में सक्रिय हैं।

यहाँ कुछ संगठनों की संक्षिप्त जानकारी दी जा रही है जो संघ के स्वयंसेवकों द्वारा प्रारम्भ किये गये। ताकि हम भी अपनी रुचि और क्षमता के अनुसार राष्ट्र सेवा में संघ के प्रत्यक्ष शाखा कार्य या फिर किसी संगठन में सक्रिय होकर अपनी आहुति दे सकें।

- अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद्
- राष्ट्र सेविका समिति
- विद्या भारती
- अखिल भारतीय शिक्षण मंडल
- अखिल भारतीय साहित्य परिषद्

- संस्कृत भारती
- भारत विकास परिषद्
- राष्ट्रीय सेवा भारती
- दीनदयाल शोध संस्थान
- विश्व हिन्दू परिषद्
- भारतीय मजदूर संघ
- विज्ञान भारती
- पूर्व सैनिक सेवा परिषद्
- क्रीड़ा भारती
- अखिल भारतीय अधिवक्ता परिषद्
- अखिल भारतीय सहकार भारती
- अखिल भारतीय ग्राहक पंचायत
- लघु उद्योग भारती
- प्रज्ञा प्रवाह
- सीमा जागरण
- स्वदेशी जागरण मंच
- भारतीय किसान संघ
- भारतीय इतिहास संकलन योजना
- राष्ट्रीय सिख संगत
- विवेकानन्द केन्द्र
- हिन्दू जागरण मंच
- आरोग्य भारती
- प्रकाशन
- हिन्दुस्थान समाचार
- अखिल भारतीय शैक्षिक महासंघ
- National Medicos Organisation
- भारतीय कुष्ठ निवारक संघ
- सक्षम - ग्राम विकास
- गोसेवा एवं संवर्धन - परिवार प्रबोधन
- सामाजिक समरसता - धर्म जागरण विभाग
- वनवासी कल्याण परिषद् - देशव्यापी से विश्वव्यापी की ओर

03-27-2017 10

प्रगतिशील विकास

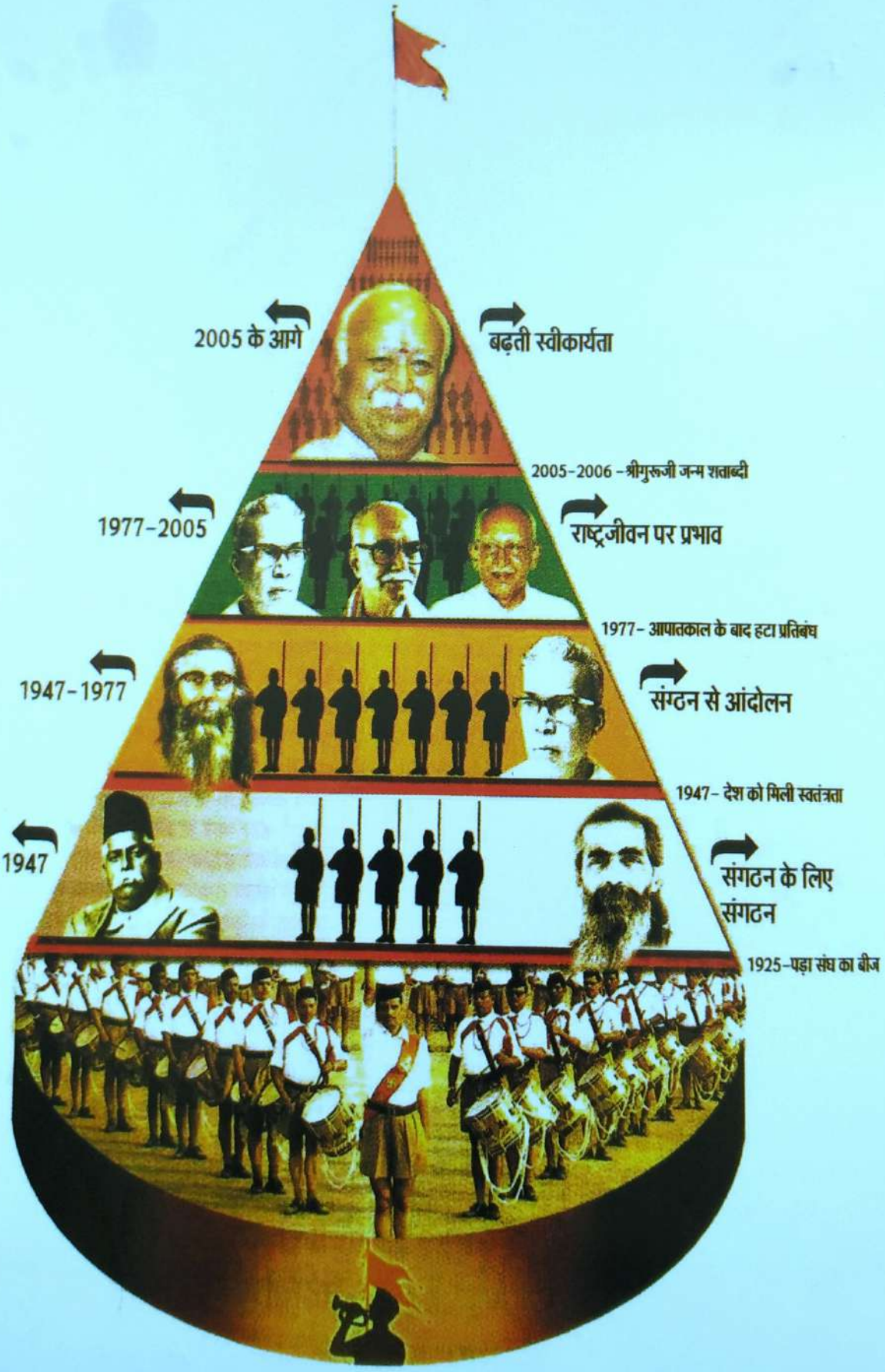

03-27-2017 10:44